प्रातः क्लास पिता श्री ओम् शान्ति 29.10.67 29-10-67

रिकार्ड:- मुखड़ा देख ले प्राणी:- ओमशान्ति। मीठे-मीठे रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बाप कहते हैं xxxx अपनी जांच करो कि याद की यात्रा से हम तमोप्रधान से सतोप्रधान तरफ कितना आगे बढ़े हैं।क्योंकि जितना जितना याद करेंगे उतना पाप कटते जावेंगे।अब यह xxx अक्षर कहाँ कोई शास्त्रों में लिखी हुई नहीं है। क्योंकि जिस जिस ने धर्म स्थापन किया,उस ने जो समझाया उसकी शास्त्र बनी हुई है।जो फिर बैठ पढ़ते हैं। पुस्तक की पूजा करते हैं।अब यह भी समझने की बात है जब कि यह लिखा हुआ है देह सहत xx देह के सर्व सम्बन्ध को छोड़ अपन को आत्मा समझो। बाप याद दिलाते हैं।तुम बच्चे पहले2 नंगे आये हैं। वहाँ तो पवित्र ही रहते हैं।मुक्ति जीवन मुक्ति में पतित आत्मा कोई जा ये नहीं सकती।वह निराकारी निर्विकारी दुनिया। इसको कहा जाता है साकारी विकारी दुनिया।फिर यह सतयुग में ही निर्विकारी दुनिया बनती है। सतयुग में रहने वाले देवताओं की तो बहुत महिमा होती है।तो अब बच्चों को समझाया जाता हैअच्छी रीत धारण कर औरों को समझाओ।तुम आत्माएं जहाँ से आये हो पवित्र ही आये हो। फिर यहाँ आये अपवित्र xx जरूर बनना ही है। सतयुग को वायसलेस वर्ल्ड,कलियुग को विशस वर्ल्ड कहा जाता है।अब तुम पतित-पावन बाप को याद करते हो। कि हमको पावन वायसलेस बनाने आप विशस दुनिया विशस शरीर में आओ।बाप खुद बैठ समझाते हैंब्रह्मा के चित्र पर ही मूंझते हैं कि दादा को क्यों बिठाया है।समझाना चाहिए यह तो ...रथ है ना। शिव भगवानुवाच है ना।यह रथ मैंने लिया है।क्योंकि मुझे प्रकृति का आधार जरूर चाहिए। नहीं तो मैं xx तुमको पतित से पावन कैसे xxxx बनाऊं।रोज पढ़ाना भी जरूर है।x अब तुम बच्चों को बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ मामेकं याद करो।सभी आत्माओं को अपने बाप को याद दिलाना है। कृष्ण को तो सभी आत्माओं का बाप नहीं कहेंगे।उनको तो अपना शरीर है।तो यह बाप बहुत सहज समझाते हैं। जब भी किसको समझाओ बोलो बाप कहते हैं तुम नंगे आये नंगे जाना है।वहाँ से पवित्र आत्मा ही आती है।नया कोई आते हैं तो भी पवित्र हैं तो उनकी महिमा जरूर होगी।सन्यासी उदासी ,गृहस्थी जिनका नाम होता है जरूर उनमें पवित्रता होती है।इसलिए महिमा होती है।वैसे इन में सभी भी बाप का प्रवेशता x होती है।धर्म स्थापन करने लिए भी पवित्र आत्मा की प्रवेशता होती है। क्योंकि उनको आना ही धर्म स्थापन करने। जैसे बाबा गुरुनानक लिए कहते हैं। अब गुरु अक्षर भी xxxx कहना पड़ता है।कोई सिक्ख बैठा हो ..., तुम सिर्फ नानक कहो तो वह कहेगा इनको इतनी भी सभ्यता नहीं है।वह कहेंगे गुरुनानक बोलो।क्योंकि नानक नाम तो बहुतों के हैं ना। जब किसकी महिमा की जाती है तो उस मर्तबे से कहा जाता है। न कहने से भी अच्छा नहीं।कहने से भी अच्छा नहीं।वास्तव में बच्चों को समझाया जाता है गुरु कोई भी नहीं है सिवाय एक के।जिसका नाम पर ही गाते हैं xxx सद्गुरु अकाल... वह अकाल मूर्त है।अर्थात जिसको काल न खावे। वह है आत्मा। तब यह कहानियां आदि बैठ बनाई है।कहानियों की किताब xx नावेल्स आदि भी बहुत पढ़ते हैं।बाबा बच्चों को खबरदार करते हैं।कब भी कोई नाविल आदि नहीं पढ़ना है।कोई कोई को आदत होती है। यहाँ तो तुम सौभाग्यवती बनती हो।कोई 2 निर्भाग्यवती होती है।बाबा कब कब सुनते हैं कि कोई ब्राह्मणियां ,ब्रह्माकुमारियां भी नावेल पढ़ती हैं।इसलिए बाबा सब बच्चों को कहते हैंकब भी किसको नावेल पढ़ता देखोतोxx तो झट उठाये फाड़ दो।इसमें डरना नहीं है। ब्राह्मणी वा बड़ी दादी हमको कोई स्राप न दे वा गुस्से न हो।ऐसी कोई बात नहीं।तुम्हारा काम है एक दो को सावधान करना।बेकायदे कोई चलन है तोसावधान करना है।कोई भी ब्राह्मणी की ऐसी चलन है जो xx ब्राह्मणियों पर काला टिका लगाती है तो झट xxxx रिपोर्ट करनी चाहिए।नहीं तो सुधरेंगे कैसे।अपना नुकसान करते रहेंगे।बुद्धि में योग बल न होगा तोयहां क्या बैठ सिखावेंगे।बाबा की मनाई है।अगर फिर भी ऐसा काम करेंगे तोxx जरूर खाती रहेगी।अपना ही नुकसान होगा।इसलिए कोई भी कोई अवगुण देखते हो तो लिखना। ब्राह्मणी कोई बेकायदे चलन तो नहीं चलती।क्योंकि वह भी सर्वेन्ट है।बाबा भी कहते हैं

29-10-67

सहत समझाते हैं। बच्चियाँ पढ़ाने वाली जो है उनमें देहाभिमान न आना चाहिए। बाबा हमारी महिमा करते हैं। कुछ भी नहीं। टीचर भी स्टुडेन्ट का सर्वेन्ट है ना। गवर्नर आद भी चिट्ठी लिखते हैं, नीचे सही करेंगे आई एम ए ओबीडियन्ट सर्वेन्ट। बिल्कुल सिम्पल नाम लिखेंगे। बाकि क्लर्क लिखेगा। अपने हाथ से कब बड़ाई नहीं लिखेंगे। आज कल तो आपे ही अपन को श्री श्री लिख देते हैं। यहाँ भी कोई ऐसे हैं श्री फलाना लिख देते हैं। वास्तव में ऐसे भी लिखना न चाहिए। न मिसेस श्री मति लिख सकती है। श्रीमत मिली ही तब जब श्री श्री आकर श्रीमत देवे। नहीं तो सभी की है ही भ्रष्ट मत। तुम समझाये सकते हो निशानी तो है ना। श्री मत से देखो यह बने हैं। जब कोई की मत से तो बने हैं ना। भारत में यह किसको भी पता नहीं है कि यह इतना ऊँच विश्व का मालिक कैसे बने। तुम किसको भी समझाये सकते हो। आओ तो हम आप को इन (ल0 ना0) की जीवन कहानी बतावें। यह विश्व के मालिक कैसे बने। तुमको तो बहुत नशा चढ़ना चाहिए। यह एमआबजेक्ट का चित्र तो हमको सदैव छाती से लगाया हुआ होना चाहिए। किसको भी बताओ हमको भगवान पढ़ाते हैं राजाओं का राजा बनाने। हम राजयोग सिखाते हैं। यह हमारा रूहानी स्कूल का बैज है। जिस से हम विश्व का महाराजा बनते हैं। बाप आये हैं इस राज्य की स्थापना करने। इस पुरानी दुनिया का विनाश सामने खड़ा है। तुम छोटी2 बच्चियाँ तो तोतली भाषा में किसको भी समझाये सकते हो। बड़े2 सम्मेलन्स आद होते हैं उनमें भी तुमको बुलाते हैं, यह चित्र तुम ले जाओ और बैठ समझाओ भारत में फिर से इन्हों का राज्य स्थापन हो रहा है। कहाँ भी बड़ी सभा में तुम समझाये सकते हो। सारीर दिन सर्विस का ही नशा रहना चाहिए। भारत में इनका राज्य स्थापन हो रहा है। बाबा हमको राजयोग सिखला रहे हैं। शिव भगवानुवाच है क्यों तुम अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो तो तुम यह बन जावेंगे 21 पीढ़ी लिए। दैवी गुण भी धारण करनी है। अभी तो सब ही आसुरी गुण है। श्रेष्ठ बनाने वाला तो एक ही है श्री श्री शिव बाबा। वही ऊँच ते ऊँच बाप हमको पढ़ाते हैं। शिव भगवानुवाच है मन्मनाभव। भागीरथ तो मशहुर है। भागीरथ को ही ब्रह्मा कहा जाता है। जिसको महावीर भी कहते हैं। यहाँ (दिलवाला मंदिर में) बैठे हुये हैं। जैनी आद जो मंदिर बनाने वाले हैं वह कोई यह जानते थोड़े ही होंगे। तुम छोटी2 बच्चियाँ कोई से वीजिट ले सकती हो। चित्र साथ हो। सारी दुनिया के कख में है कुम्भ। गीता आद शास्त्र आद ले जाये कथा सुनाते हैं। वह है झूठी शास्त्र। तुम्हारे बुद्धि में होंगा सितम। वह है ही झूठ खण्ड। तुम सच्च खण्ड की स्थापना करते हो। अक्षर ही है ना पतित और पावन। परन्तु पत्थर बुधि मनुष्य कुछ समझते ही नहीं। जैसे जनावर अपना शरीर निर्वाह अर्थ करते हैं वैसे मनुष्य भी करते हैं। कोई2 पशु और पक्षी भी अपना घर ऐसा युक्ति से बनाते हैं जो कोई की ताकत नहीं। बहुत खुबसुरत बनाते हैं। कोई मनुष्य बनाये न सके। बहुत पर्फेक्ट क्लास पक्षी आद होते हैं। अभी तुम बहुत 2 श्रेष्ठ बन रहे हो। यह भारत की एमआबजेक्ट है ना। भारत में इन्हों का राज्य था। कितना नशा चढ़ना चाहिए। यहाँ बाबा अच्छी रीत नशा चढ़ाते हैं। सभी कहते हैं तो हम तो ल0 ना0 बनेंगे। राम सीता बनने लिए कोई भी हाथ न उठावेंगे। चित्र भी बनाते हैं। पूछते हैं तीर कमान हिंसक निशानी है, यह राम चन्द्र को देवें वा निकाल देवें। बाबा कहते हैं देना पड़े। मनुष्य नहीं समझते यह इनको क्यों देते हैं। तुम क्षत्री हो ना। वह है हिंसक क्षत्री। तुम हो अहिंसक। तुम अहिंसक क्षत्रियों को कोई भी नहीं जानते। यह तुम अभी समझते हो। गीता में भी अक्षर है मन्मनाभव। अपन को आत्मा समझो। यह तो समझने की बात है। और कोई भी समझ नहीं सकते। बाप बैठ भाईयों को शिक्षा देते हैं। बच्चे आत्माभिमानी बनो। यह टेवे फिर तुम्हारे लिए 21 जन्म चलती है। तुमको शिक्षा मिलती है 21 जन्मों लिए। बाबा घड़ी2 मूल बात समझाते हैं अपन को आत्मा समझ बैठो। परमात्मा हम आत्माओं को समझाते हैं। तुम घड़ी2 देहाभिमान में आये भूल जाते हो। फिर घड़ी2 याद करना यह होता है। भक्ति मार्ग में भी भक्ति करते2 बुधि और तरफ चली जाती है। एक टक सिप-

29-10-67

नवधा भक्ति वाले ही सिर्फ बैठते हैं। जिसको तिवर भक्ति कहा जाता है। एकदम लव लीन हो जाते हैं। तुम याद में बैठते हो कोई समय एकदम अशरीरी बन जाते हैं। जो अच्छे बच्चे होंगे वह ही इस अवस्था में बैठेंगे। देह का भान निकल जावेगा। अशरीरी हो उस मस्ती में बैठे रहेंगे। यह टेव पड़ जावेगी। सन्यासी हैं तत्व ज्ञानी वा ब्रह्म ज्ञानी। वह कहते है हम लीन हो जावेंगे। यह पुराना शरीर छोड़ ब्रह्म तत्व में लीन हो जवेंगे। सभी का अपना धर्म है ना। कोई भी दूसरे के धर्म को नहीं मानते। आदी सनातन देवी देवता धर्म वाले भी तमोप्रधान बन गये हैं। गीता का भगवान कब आया था, गीता का युग कब था, कोई भी नहीं जानते। तुम जानते हो इस संगम युग पर ही बाप आये राजयोग सिखलाते हैं। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं। भारत की ही बात है। अनेक धर्म भी थी जरूर। गायन भी एक धर्म की स्थापना और अनेक धर्मोंका विनाश। सतयुग में था एक धर्म। कलियुग में अभी है अनेक धर्म। फिर एक धर्म की स्थापना होती है। एक धर्म था अब नहीं है। बाकि सभी खड़े हैं। बड़ का झाड़ का मिसाल भी बिलकुल ठीक है। फाउन्डेशन है नहीं। बाकि सारा झाड़ खड़ा है। वैसे इस में भी देवी देवता धर्म है नहीं। आदी सनातन देवी देवता धर्म जो था वह अब प्रायः लोप है। फिर से बाप स्थापन करते हैं। बाकि इतने सब धर्म तो पीछे आये हैं। फिर भी चक्र को रिपीट जरूर करना है। अर्थात पुरानी दुनिया से फिर नई दुनिया जरूर बनना है। नई दुनिया में इन्हों का राज्य था। तुम्हारे पास बड़े चित्र भी हैं। छोटे भी हैं। बड़ी चीज़ होंगी तो कोई देख पूछेंगे यह क्या उठाया है। बोलो हम ने वह चीज़ उठाई है जिस से मनुष्य बेगर से प्रिन्स बन जाता है। दिल में बड़ा उमंग खुशी रहनी चाहिए। हम आत्माएँ भगवान के बच्चे हैं। हम आत्माओं को भगवान पढ़ाते हैं। बाबा हमको नयनों पर बिठाये ले जाते हैं। इस छी2 दुनिया में तो हमको रहने का नहीं है। त्राहि त्राहि करेंगे आगे चल कर। बात मत पूछो। मुसलमानों को जब लड़ाई लगती है, एक गाँव में कुछ आपस में झगड़ा हुआ, अखबार में पड़ा तो दूसरे गाँव में भी 5-6 को मार देंगे। यवनों और हिन्दुओं का भी बहुत झगड़ा होता है। खून की नदियाँ बहनी हैं। अपने धर्म वाले एक को इतने तंग नहीं करते है। और से बिगरते हैं तो बात मत पूछो। करोड़ों मनुष्य मरते हैं। मरेंगे करोड़ों तो लिखेंगे लाख। पुरा थोड़े ही बताते हैं। यह तो तुम बच्चों की बुधि में है। हम इन आँखों से जो कुछ देखते हैं यह कुछ भी रहना नहीं है। यहाँ तो मनुष्य हैं काँटों के मिसल। सतयुग है फूलों का बगीचा। फिर हमारे नयन ही ठंडी हो जावेंगी। बगिचे में जाने से नयन शीतल हो जाते हैं। तुम तो अभी पदम भाग्यशाली बन रहे हो। ब्राह्मण जो बनते हैं उनके कदम में पदम है। तुम बच्चों को समझाना चाहिए हम यह राज्य स्थापन कर रहे हैं। इसलिए बाबा बैजेज भी बनवाई हैं। सफेद सारी पड़ी हो बैज पड़ा हो। गाते भी हैं आत्माएँ परमात्मा अलग रहे बहुकाल.... परन्तु बहुकाल का अर्थ भी साधु आद थोड़े ही जानते हैं। तुमको बाप ने बताया है। बच्चे तो बहुत हैं। परन्तु नाम-ग्रामी तो यह राधे कृष्ण ही हैं। सतयुग के फर्स्ट प्रिन्स प्रिन्सेज। कब किसकी ख्याल में भी नहीं आवेंगे कि यह कहाँ से आये। सतयुग के आगे जरूर कलियुग होगा। उन्हों ने क्या कर्म किया जो विश्व का मालिक बने। भारतवासी कोई इन्हों को विश्व का मालिक नहीं समझते। इनका जब राज्य था तो भारत में और कोई धर्म था नहीं। अभी तुम बच्चे समझते हो बाप हमको राजयोग सिखाये रहे हैं। हम यह (ल०ना०) बन रहे हैं। हमारी एम आबजेक्ट ही यह है। भल मंदिरों में इन्हों के चित्र आदि हैं परन्तु यह थोड़े ही समझते हैं कि इस समय यह स्थापन हो रही है। तुम्हारे में भी नम्बरवार समझते हैं। कोई तो बिलकुल ही भूल जाते हैं। चलन ऐसी होती है जैसे मेहतरों की। यहाँ समझाते तो बहुत हैं, यहाँ से बाहर निकले, खलास। सर्विस का शौक रहना चाहिए। सबको यह पैगाम देने युक्ति रचे। मेहनत करनी है। नशे से कहना चाहिए शिव बाबा कहते हैं मुझे याद करो तो पाप मिट जावेंगे। हम एक शिव बाबा के और किसको याद नहीं करते। ऐसे ऐसे उछल से बताये चाहिए। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप का याद प्यार गुडमार्निंग। बच्चों को नमस्ते।